[०९] श्री अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गसूत्रम्

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

“अनुत्तरोपपातिकदशा” मूलं एवं वृत्तिः

[मूलं एवं अभयदेवसूरि रचित वृत्तिः]

[आद्य संपादकः - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुनः संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर **(M.Com., M.Ed., Ph.D.)**

29/09/2014, सोमवार, २०७० आसो शुक्ल ५

jain_e_library’s Net Publications

आगम (०९)	“अनुत्तरोपपातिकदशा” - अंगसूत्र-९ (मूलं+वृत्ति:) वर्ग्ग: [–], ---------- अध्ययनं [–] ---------- मूलं [–]
प्रत सूत्रांक [–] दीप अनुक्रम [–]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [०९], अंग सूत्र - [०९] “अनुत्तरोपपातिकदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्ति:
	अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गसूत्रस्य मूल “टाइटल पेज”

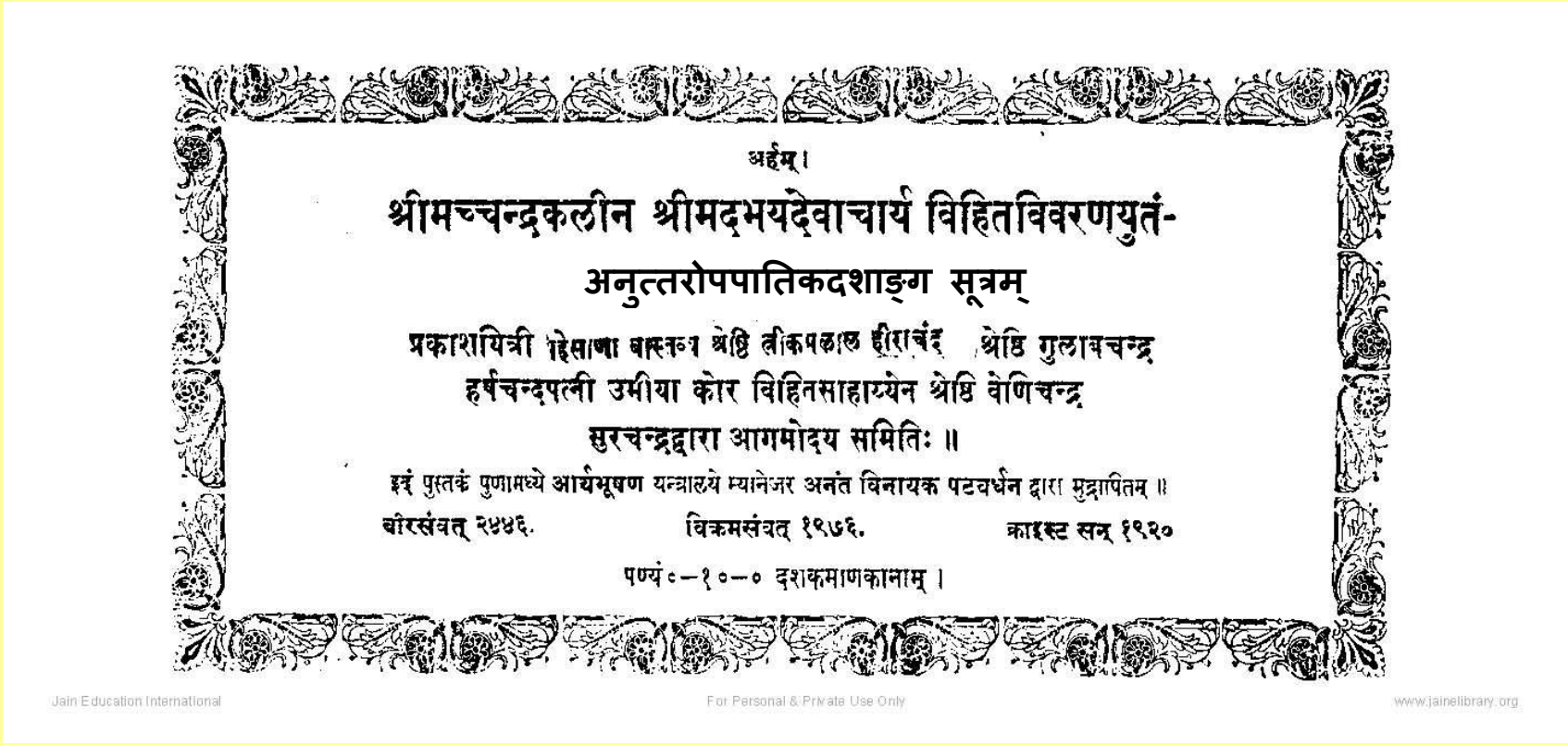

अर्हम्।

श्रीमच्चन्द्रकलीन श्रीमदभयदेवाचार्य विहितविवरणयुतं-

अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्रम्

प्रकाशयित्री हेसाणा वास्तव्य श्रेष्ठि लीकपलाल हीराचंद श्रेष्ठि गुलाबचन्द्र
हर्षचन्दपत्नी उमीया कोर विहितसाहाय्येन श्रेष्ठि वेणिचन्द्र
सुरचन्द्रद्वारा आगमोदय समितिः ॥

इदं पुस्तकं पुणामध्ये आर्यभूषण यन्त्रालये म्यानेजर अनंत विनायक पटवर्धन द्वारा मुद्रापितम् ॥

वीरसंवत् २४४६. विक्रमसंवत् १९७६. क्राइस्ट सन् १९२०

पण्यं ०–१०–० दशकमाणकानाम् ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूलांक:	वर्ग्ग:	पृष्ठांक:	मूलांक:	--------	पृष्ठांक:	मूलांक:	--------	पृष्ठांक:
००१	वर्ग्ग: १,जालि, मयाली	००४		वर्ग्ग: २, दीर्घसेन, महासेन,	००६		वर्ग्ग: ३,धन्य, सुनक्षत्र आदि	००७
	उवयालि आदि			लष्टदन्त आदि			ऋषिदास, पेल्लक आदि	
	दश अध्ययनानि			अष्ट अध्ययनानि			त्रयोदश अध्ययनानि	

['अनुत्तरोपपातिकदशा' - मूलं एवं वृत्तिः] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

यह प्रत सबसे पहले "अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग" के नामसे सन १९२० (विक्रम संवत १९७६) में आगमोदय समिति द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब |

इसी प्रत को फिर से दुसरे पूज्यश्रीओने अपने-अपने नामसे भी छपवाई, जिसमे उन्होंने खुदने तो कुछ नहीं किया, मगर इसी प्रत को ऑफसेट करवा के, अपना एवं अपनी प्रकाशन संस्था का नाम छाप दिया. जिसमे किसीने पूज्यपाद् सागरानंदसूरिजी के नाम को आगे रखा, और अपनी वफादारी दिखाई, तो किसीने स्वयं को ही इस पुरे कार्य का कर्ता बता दिया और श्रीमद्सागरानंदसूरिजी तथा प्रकाशक का नाम ही मिटा दिया |

✣ **हमारा ये प्रयास क्यों?** ✣ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, **४५-आगम सटीक** भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है, किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने इसी प्रत को स्केन करवाई, उसके बाद एक **स्पेशियल फोरमेट** बनवाया, जिसमे बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर **शीर्षस्थानमे** आगम का नाम, फिर वर्ग्ग, अध्ययन और मूलसूत्र के क्रमांक लिख दिए, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा वर्ग्ग एवं अध्ययन चल रहे है उसका सरलता से ज्ञान हो शके, बायीं तरफ **आगम** का **क्रम** और इसी **प्रत** का **सूत्रक्रम** दिया है, उसके साथ वहाँ **'दीप अनुक्रम'** भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके | हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रों के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ **कौंस [-]** दिए है और जहां गाथा है वहाँ **||-||** ऐसी **दो लाइन** खींची है या फिर गाथा शब्द लिख दिया है |

हमने एक अनुक्रमणिका भी बनायी है, जिसमे प्रत्येक अध्ययन आदि लिख दिये है और साथमें इस सम्पादन के पृष्ठांक भी दे दिए है, जिससे अभ्यासक व्यक्ति अपने चहिते वर्ग्ग, अध्ययन या विषय तक आसानी से पहुँच शकता है | अनेक पृष्ठ के नीचे **विशिष्ठ फूटनोट** भी लिखी है, जिसमे उस पृष्ठ पर चल रहे ख़ास विषयवस्तु की, मूल प्रतमें रही हुई कोई-कोई मुद्रण-भूल की या क्रमांकन सम्बन्धी जानकारी प्राप्त होती है |

अभी तो ये jain_e_library.org का 'इंटरनेट पब्लिकेशन' है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगो तक पहुँचने का यहीं सरल, सस्ता और आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर ईसि को मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है|

.....मुनि दीपरत्नसागर.

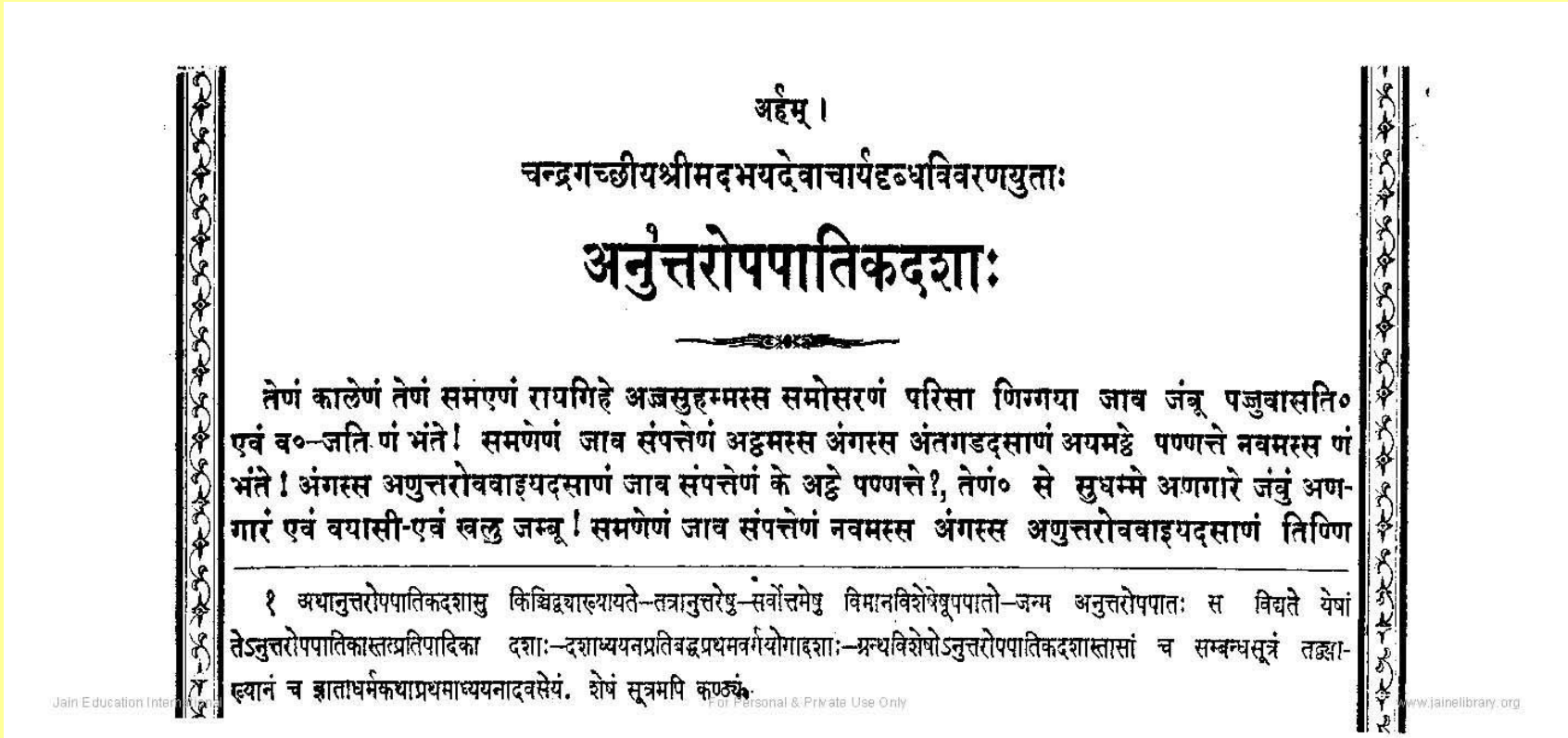

अर्हम् ।

चन्द्रगच्छीयश्रीमदभयदेवाचार्यदृब्धविवरणयुताः

अनुत्तरोपपातिकदशाः

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे अज्जसुहम्मस्स समोसरणं परिसा णिग्गया जाव जंबू पज्जुवासति० एवं व०–जति णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते नवमस्स णं भंते! अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?, तेणं० से सुधम्मे अणगारे जंबुं अणगारं एवं वयासी-एवं खलु जम्बू! समणेणं जाव संपत्तेणं नवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं तिण्णि

१ अथानुत्तरोपपातिकदशासु किञ्चिद्व्याख्यायते–तत्रानुत्तरेषु–सर्वोत्तमेषु विमानविशेषेषूपपातो–जन्म अनुत्तरोपपातः स विद्यते येषां तेऽनुत्तरोपपातिकास्तत्प्रतिपादिका दशाः–दशाध्ययनप्रतिबद्धप्रथमवर्गयोगाद्दशाः–ग्रन्थविशेषोऽनुत्तरोपपातिकदशास्तासां च सम्बन्धसूत्रं तद्व्याख्यानं च ज्ञाताधर्मकथाप्रथमाध्ययनादवसेयं. शेषं सूत्रमपि कण्ठ्यं.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [०९], अंग सूत्र - [०९] “अनुत्तरोपपातिकदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

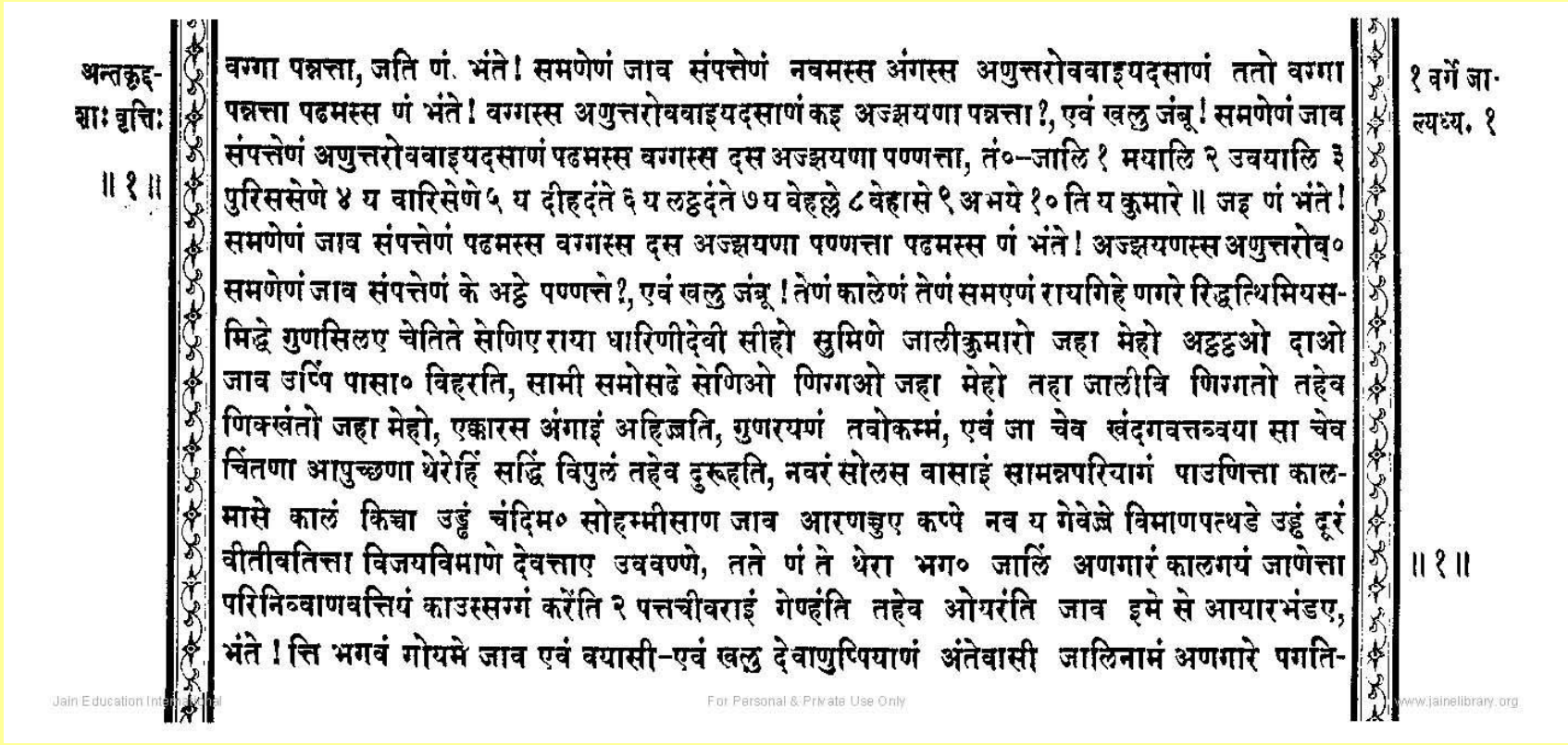

अन्तकृद्दशाः वृत्तिः ॥ १ ॥

वग्गा पन्नत्ता, जति णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं नवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं ततो वग्गा पन्नत्ता पढमस्स णं भंते! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं कइ अज्झयणा पन्नत्ता?, एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं०–जालि १ मयालि २ उवयालि ३ पुरिससेणे ४ य वारिसेणे ५ य दीहदंते ६ य लट्ठदंते ७ य वेहल्ले ८ वेहासे ९ अभये १० ति य कुमारे ॥ जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स अणुत्तरोव० समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णगरे रिद्धत्थिमियसमिद्धे गुणसिलए चेतिते सेणिए राया धारिणीदेवी सीहो सुमिणे जालीकुमारो जहा मेहो अट्ठट्ठओ दाओ जाव उप्पिं पासा० विहरति, सामी समोसढे सेणिओ णिग्गओ जहा मेहो तहा जालीवि णिग्गतो तहेव णिक्खंतो जहा मेहो, एक्कारस अंगाइं अहिज्जति, गुणरयणं तवोकम्मं, एवं जा चेव खंदगवत्तव्वया सा चेव चिंतणा आपुच्छणा थेरेहिं सद्धिं विपुलं तहेव दुरूहति, नवरं सोलस वासाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम० सोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए कप्पे नव य गेवेज्जे विमाणपत्थडे उड्ढं दूरं वीतीवतित्ता विजयविमाणे देवत्ताए उववण्णे, तते णं ते थेरा भग० जालिं अणगारं कालगयं जाणेत्ता परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति २ पत्तचीवराइं गेण्हंति तहेव ओयरंति जाव इमे से आयारभंडए, भंते! त्ति भगवं गोयमे जाव एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी जालिनामं अणगारे पगति-

१ वर्गे जा० ल्यध्य. १

॥ १ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जालिकुमारस्य कथा

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१,२]

भद्दए से णं जाली अणगारे कालगते कहिं गते ? कहिं उववन्ने ?, एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी तहेव जधा खंदयस्स जाव काल० उड्ढं चंदिम जाव विजए विमाणे देवत्ताए उववण्णे । जालिस्स णं भंते ! देवस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?, गोयमा ! बत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता । से णं भंते ! ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं ३ कहिं गच्छिहिति २?, गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, ता एवं जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमवग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । एवं सेसाणवि अट्ठण्हं भाणियव्वं, नवरं सत्त धारिणिसुआ वेहल्लवेहासा चेल्लणाए, आइल्लाणं पंचण्हं सोलस वासातिं सामन्नपरियातो तिण्हं बारस वासातिं दोण्हं पंच वासातिं, आइल्लाणं पंचण्हं आणुपुव्वीए उववातो विजये वेजयंते जयंते अपराजिते सव्वट्ठसिद्धे, दीहदंते सव्वट्ठसिद्धे, उक्कमेणं सेसा, अभओ विजए, सेसं जहा पढमे, अभयस्स णाणत्तं, रायगिहे नगरे सेणिए राया नंदा देवी माया सेसं तहेव, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते (सूत्रं १)। जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं तेरस अज्झयणा पन्नत्ता, तं०-दीहसेणे १ महासेणे २ लट्ठदंते य ३ गूढदंते य ४ सुद्धदंते ५ हल्ले ६ दुमे ७ दुमसेणे ८ महादुमसेणे य ९ आहिते सीहे य १० सीहसेणे य ११ महासीहसेणे य आहिते १२ पुन्नसेणे य १३

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

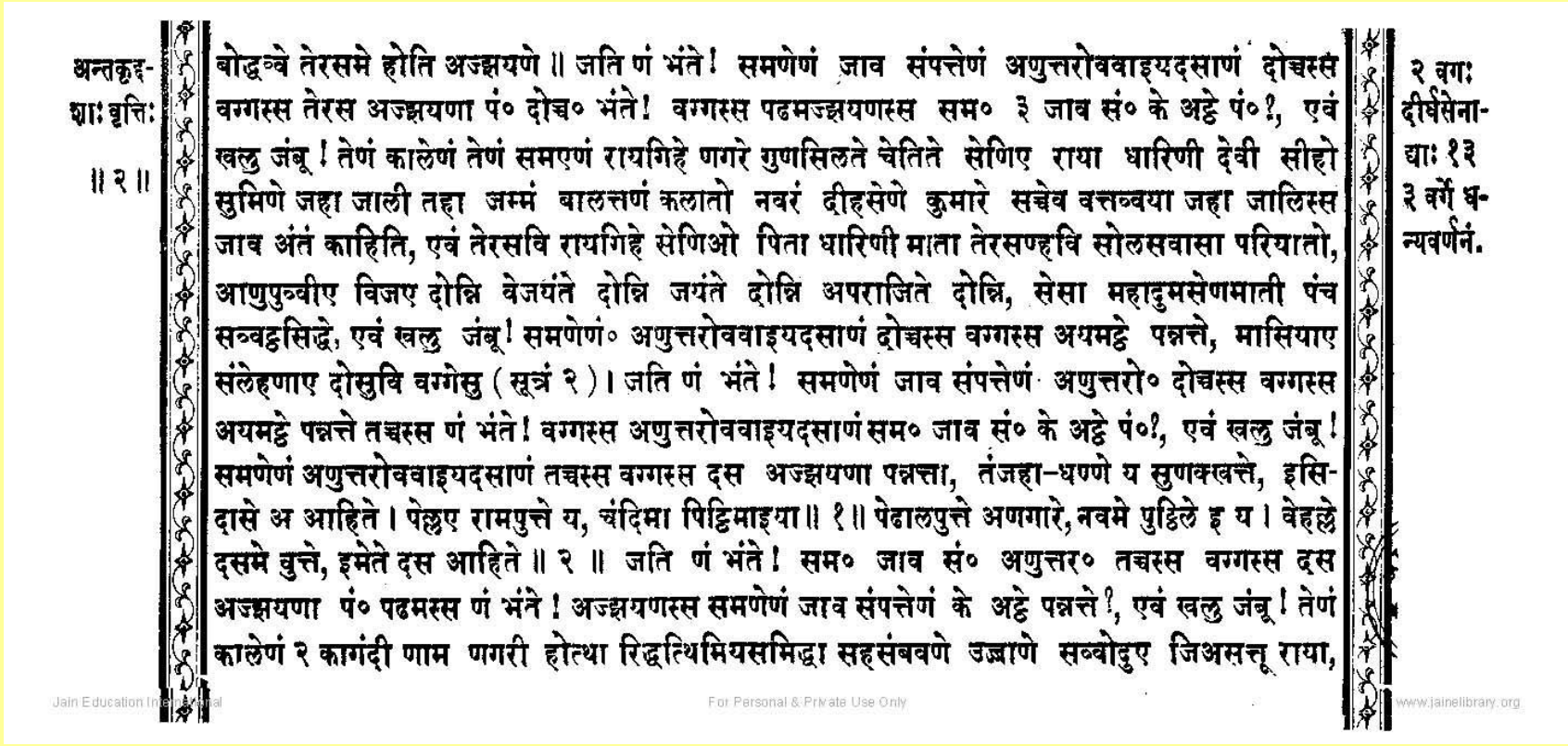

प्रत सूत्रांक [२,३] + गाथा

दीप अनुक्रम [३-६, ७-१०]

अन्तकृद्दशा: वृत्ति:

॥ २ ॥

बोद्धव्वे तेरसमे होति अज्झयणे ॥ जति णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पं० दोच्च० भंते! वग्गस्स पढमज्झयणस्स सम० ३ जाव सं० के अट्ठे पं०?, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णगरे गुणसिलते चेतिते सेणिए राया धारिणी देवी सीहो सुमिणे जहा जाली तहा जम्मं बालत्तणं कलातो नवरं दीहसेणे कुमारे सच्चेव वत्तव्वया जहा जालिस्स जाव अंतं काहिति, एवं तेरसवि रायगिहे सेणिओ पिता धारिणी माता तेरसण्हवि सोलसवासा परियातो, आणुपुव्वीए विजए दोन्नि वेजयंते दोन्नि जयंते दोन्नि अपराजिते दोन्नि, सेसा महादुमसेणमाती पंच सव्वट्ठसिद्धे, एवं खलु जंबू! समणेणं० अणुत्तरोववाइयदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, मासियाए संलेहणाए दोसुवि वग्गेसु (सूत्रं २)। जति णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरो० दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते तच्चस्स णं भंते! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं सम० जाव सं० के अट्ठे पं०?, एवं खलु जंबू! समणेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा-धण्णे य सुणक्खत्ते, इसिदासे अ आहिते। पेल्लए रामपुत्ते य, चंदिमा पिट्ठिमाइया॥ १॥ पेढालपुत्ते अणगारे, नवमे पुट्ठिले इ य। वेहल्ले दसमे वुत्ते, इमेते दस आहिते ॥ २ ॥ जति णं भंते! सम० जाव सं० अणुत्तर० तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पं० पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते?, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २ कागंदी णाम णगरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा सहसंबवणे उज्जाणे सव्वोदुए जिअसत्तू राया,

२ वग: दीर्घसेनाद्या: १३ ३ वर्गे धन्यवर्णनं.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [३] + गाथा

दीप अनुक्रम [७-१०]

तत्थ णं कागंदीए नगरीए भद्दा णामं सत्थवाही परिवसइ अड्ढा जाव अपरिभूआ, तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते धन्ने नामं दारए होत्था अहीण जाव सुरूवे पंचधातीपरिग्गहिते तं०–खीरधाती जहा महब्बले जाव बावत्तारिं कलातो अहीए जाव अलंभोगसमत्थे जाते यावि होत्था, तते णं सा भद्दा सत्थवाही धन्नं दारयं उम्मुक्कबालभावं जाव भोगसमत्थं वावि जाणेत्ता बत्तीसं पासायवडिंसते कारेति अब्भुग्गतमूसिते जाव तेसिं मज्झे भवणं अणेगखंभसयसन्निविट्ठं जाव बत्तीसाए इब्भवरकन्नगाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेति २ बत्तीसओ दाओ जाव उप्पिंपासाय० फुट्टेतेहिं जाव विहरति, तेणं कालेणं २ समणे० समोसढे परिसा निग्गया राया जहा कोणितो तहा जियसत्तू णिग्गतो, तते णं तस्स धन्नस्स तं महता जहा जमाली तहा णिग्गतो, नवरं पायचारेणं जाव जं नवरं अम्मयं भद्दं सत्थवाहिं आपुच्छामि, तते णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिते जाव पव्वयामि जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ मुच्छिया वुत्तपडिवुत्तया जहा महब्बले जाव जाहे णो संचाएति जहा थावच्चापुत्तो जियसत्तुं आपुच्छति छत्तचामराओ० सयमेव जियसत्तू णिक्खमणं करेति जहा थावच्चापुत्तस्स कण्हो जाव पव्वतिते० अणगारे जाते ईरियासमिते जाव बंभयारी, तते णं से धन्ने अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिते तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदति णमंसति २

१ नवरं तृतीयवर्गे 'वुत्तपडिवुत्तय'त्ति प्रव्रज्याग्रहणश्रवणमूर्च्छितोत्थिताया मातुः पुत्रस्य च परस्परं प्रव्रज्याग्रहणनिषेधनविषया तत्समर्थनविषया चोक्तिप्रत्युक्तिरित्यर्थः, महाबलो भगवत्यां. २ थावच्चापुत्रः पञ्चमे ज्ञाताध्ययने.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्य अनगार - कथा

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [०९], अंग सूत्र - [०९] "अनुत्तरोपपातिकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [३] + गाथा

दीप अनुक्रम [७-१०]

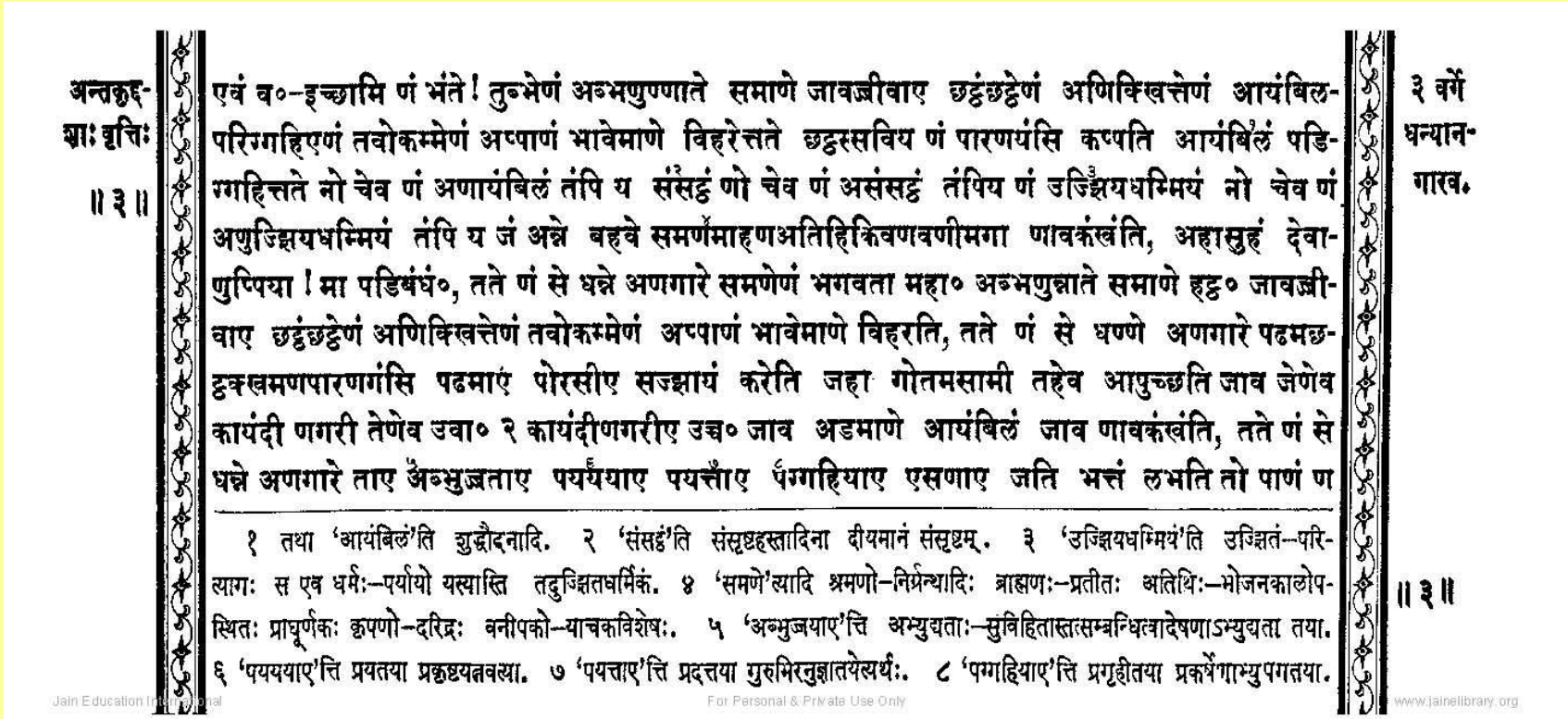

अन्तकृद्दशाः वृत्तिः ॥ ३ ॥

एवं व०–इच्छामि णं भंते! तुब्भेणं अब्भणुण्णाते समाणे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं आयंबिल-परिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरेत्तते छट्ठस्सविय णं पारणयंसि कप्पति आयंबिलं[1] पडि-ग्गहित्तते नो चेव णं अणायंबिलं तंपि य संसट्ठं[2] णो चेव णं असंसट्ठं तंपिय णं उज्झियधम्मियं[3] नो चेव णं अणुज्झियधम्मियं तंपि य जं अन्ने बहवे समणमाहणअतिहिकिवणवणीमगा णावकंखंति, अहासुहं देवा-णुप्पिया! मा पडिबंधं०, तते णं से धन्ने अणगारे समणेणं भगवता महा० अब्भणुन्नाते समाणे हट्ठ० जावज्जी-वाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तते णं से धण्णे अणगारे पढमछ-ट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरसीए सज्झायं करेति जहा गोतमसामी तहेव आपुच्छति जाव जेणेव कायंदी णगरी तेणेव उवा० २ कायंदीणगरीए उच्च० जाव अडमाणे आयंबिलं जाव णावकंखंति, तते णं से धन्ने अणगारे ताए अब्भुज्जताए[4] पयत्तयाए[5] पयत्ताए[6] पग्गहियाए[7] एसणाए जति भत्तं लभति तो पाणं ण

१ तथा 'आयंबिलं'ति शुद्धौदनादि. २ 'संसट्ठं'ति संसृष्टहस्तादिना दीयमानं संसृष्टम्. ३ 'उज्झियधम्मियं'ति उज्झितं–परि-त्यागः स एव धर्मः–पर्यायो यस्यास्ति तदुज्झितधर्मिकं. ४ 'समणे'त्यादि श्रमणो–निर्ग्रन्थादिः ब्राह्मणः–प्रतीतः अतिथिः–भोजनकालोप-स्थितः प्राघूर्णकः कृपणो–दरिद्रः वनीपको–याचकविशेषः. ५ 'अब्भुज्जयाए'त्ति अभ्युद्यताः–सुविहितास्तत्सम्बन्धित्वादेषणाऽभ्युद्यता तया. ६ 'पययाए'त्ति प्रयतया प्रकृष्टयत्नवत्या. ७ 'पयत्ताए'त्ति प्रदत्तया गुरुभिरनुज्ञातयेत्यर्थः. ८ 'पग्गहियाए'त्ति प्रगृहीतया प्रकर्षेणाभ्युपगतया.

३ वर्गे धन्यान-गारव.

॥ ३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्य अनगार - कथा

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [०९], अंग सूत्र - [०९] "अनुत्तरोपपातिकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [३] + गाथा

दीप अनुक्रम [७-१०]

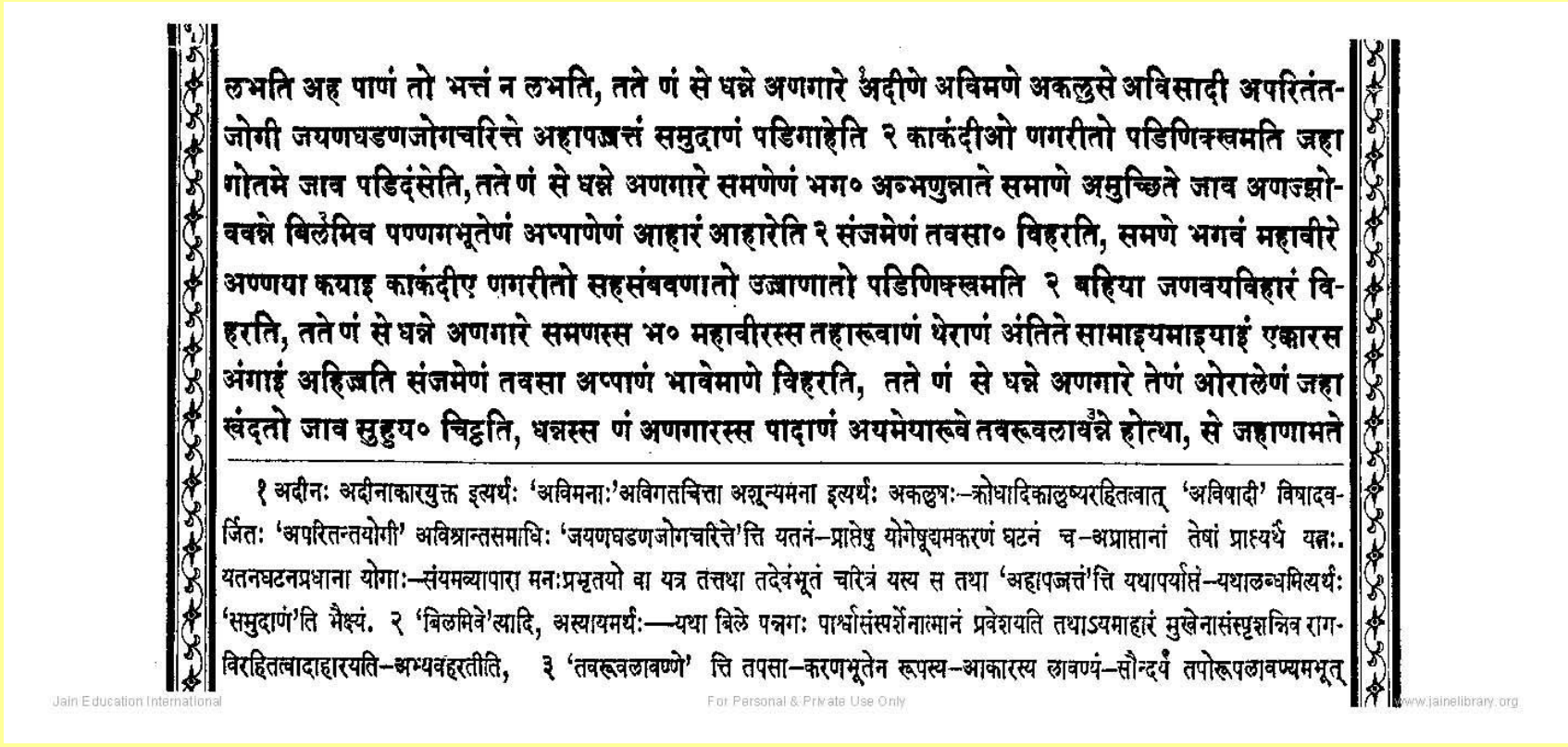

लभति अह पाणं तो भत्तं न लभति, तते णं से धन्ने अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अविसादी अपरितंत-
जोगी जयणघडणजोगचरित्ते अहापज्जत्तं समुदाणं पडिगाहेति २ काकंदीओ णगरीतो पडिणिक्खमति जहा
गोतमे जाव पडिदंसेति, तते णं से धन्ने अणगारे समणेणं भग० अब्भणुन्नाते समाणे अमुच्छिते जाव अणज्झो-
ववन्ने बिलमिव पण्णगभूतेणं अप्पाणेणं आहारं आहारेति २ संजमेणं तवसा० विहरति, समणे भगवं महावीरे
अण्णया कयाइ काकंदीए णगरीतो सहसंबवणातो उज्जाणातो पडिणिक्खमति २ बहिया जणवयविहारं वि-
हरति, तते णं से धन्ने अणगारे समणस्स भ० महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिते सामाइयमाइयाइं एक्कारस
अंगाइं अहिज्जति संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तते णं से धन्ने अणगारे तेणं ओरालेणं जहा
खंदतो जाव सुहुय० चिट्ठति, धन्नस्स णं अणगारस्स पादाणं अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहाणामते

१ अदीनः अदीनाकारयुक्त इत्यर्थः 'अविमनाः'अविगतचित्ता अशून्यमना इत्यर्थः अकलुषः–क्रोधादिकालुष्यरहितत्वात् 'अविषादी' विषादव-
र्जितः 'अपरितन्तयोगी' अविश्रान्तसमाधिः 'जयणघडणजोगचरित्ते'त्ति यतनं–प्राप्तेषु योगेषूद्यमकरणं घटनं च–अप्राप्तानां तेषां प्राप्त्यर्थं यत्नः.
यतनघटनप्रधाना योगाः–संयमव्यापारा मनःप्रभृतयो वा यत्र तत्तथा तदेवंभूतं चरित्रं यस्य स तथा 'अहापज्जत्तं'त्ति यथापर्याप्तं–यथालब्धमित्यर्थः
'समुदाणं'ति भैक्ष्यं. २ 'बिलमिवे'त्यादि, अस्यायमर्थः—यथा बिले पन्नगः पार्श्वासंस्पर्शेनात्मानं प्रवेशयति तथाऽयमाहारं मुखेनासंस्पृशन्निव राग-
विरहितत्वादाहारयति–अभ्यवहरतीति, ३ 'तवरूवलावण्णे' त्ति तपसा–करणभूतेन रूपस्य–आकारस्य लावण्यं–सौन्दर्यं तपोरूपलावण्यमभूत्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्य अनगार - कथा

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [०९], अंग सूत्र - [०९] "अनुत्तरोपपातिकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [३] + गाथा

दीप अनुक्रम [७-१०]

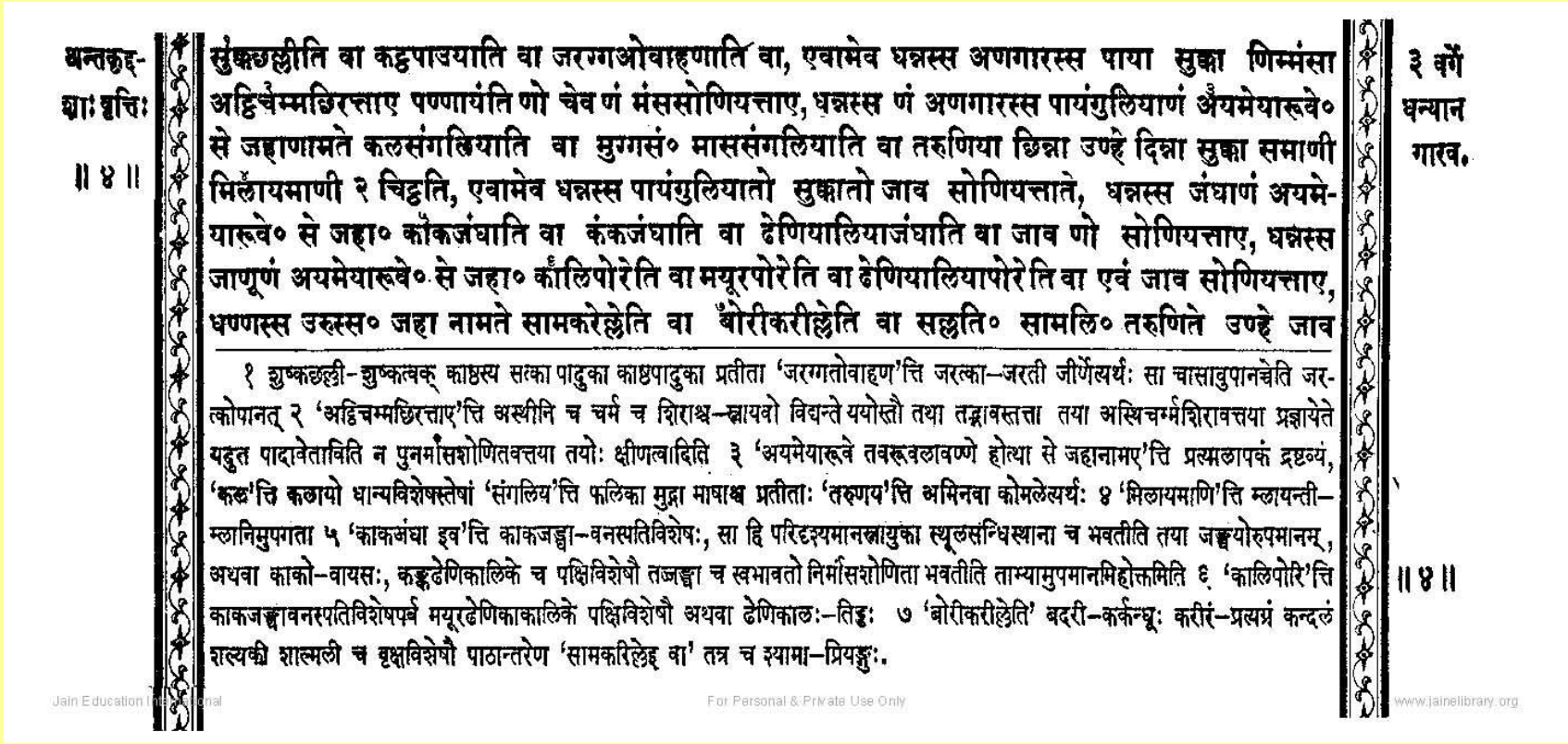

अन्तकृद्दशाः वृत्तिः ॥ ४ ॥

सुक्कछल्लीति वा कट्ठपाउयाति वा जरग्गओवाहणाति वा, एवामेव धन्नस्स अणगारस्स पाया सुक्का णिम्मंसा अट्ठिचेम्मछिरत्ताए पण्णायंति णो चेव णं मंससोणियत्ताए, धन्नस्स णं अणगारस्स पायंगुलियाणं अयमेयारूवे० से जहाणामते कलसंगलियाति वा मुग्गसं० माससंगलियाति वा तरुणिया छिन्ना उण्हे दिन्ना सुक्का समाणी मिलायमाणी २ चिट्ठति, एवामेव धन्नस्स पायंगुलियातो सुक्कातो जाव सोणियत्ताते, धन्नस्स जंघाणं अयमेयारूवे० से जहा० काकजंघाति वा कंकजंघाति वा ढेणियालियाजंघाति वा जाव णो सोणियत्ताए, धन्नस्स जाणूणं अयमेयारूवे० से जहा० कालिपोरेति वा मयूरपोरेति वा ढेणियालियापोरेति वा एवं जाव सोणियत्ताए, धण्णस्स उरुस्स० जहा नामते सामकरेल्लेति वा बोरीकरील्लेति वा सल्लति० सामलि० तरुणिते उण्हे जाव

१ शुष्कछल्ली-शुष्कत्वक् काष्ठस्य सत्का पादुका काष्ठपादुका प्रतीता 'जरग्गतोवाहण'त्ति जरत्का-जरती जीर्णेत्यर्थः सा चासावुपानच्चेति जरत्कोपानत् २ 'अट्ठिचम्मछिरत्ताए'त्ति अस्थीनि च चर्म च शिराश्च-स्नायवो विद्यन्ते ययोस्तौ तथा तद्भावस्तत्ता तया अस्थिचर्म्मशिरावत्तया प्रज्ञायेते यदुत पादावेताविति न पुनर्मांसशोणितवत्तया तयोः क्षीणत्वादिति ३ 'अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था से जहानामए'त्ति प्रत्यक्षालापकं द्रष्टव्यं, 'कल'त्ति कलायो धान्यविशेषस्तेषां 'संगलिय'त्ति फलिका मुद्गा माषाश्च प्रतीताः 'तरुणय'त्ति अभिनवा कोमलेत्यर्थः ४ 'मिलायमाणि'त्ति म्लायन्ती-म्लानिमुपगता ५ 'काकजंघा इव'त्ति काकजङ्घा-वनस्पतिविशेषः, सा हि परिदृश्यमानस्नायुका स्थूलसन्धिस्थाना च भवतीति तया जङ्घयोरुपमानम्, अथवा काको-वायसः, कङ्कढेणिकालिके च पक्षिविशेषौ तज्जङ्घा च स्वभावतो निर्मांसशोणिता भवतीति ताभ्यामुपमानमिहोक्तमिति ६ 'कालिपोरि'त्ति काकजङ्घावनस्पतिविशेषपर्व मयूरढेणिकाकालिके पक्षिविशेषौ अथवा ढेणिकालः-तिड्डः ७ 'बोरीकरीलेति' बदरी-कर्कन्धूः करीरं-प्रत्यग्रं कन्दलं शल्यकी शाल्मली च वृक्षविशेषौ पाठान्तरेण 'सामकरिल्लेइ वा' तत्र च श्यामा-प्रियङ्गुः.

३ वर्गे धन्यान गारव.

॥ ४ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्य अनगार - कथा

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [०९], अंग सूत्र - [०९] "अनुत्तरोपपातिकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [३] + गाथा

दीप अनुक्रम [७-१०]

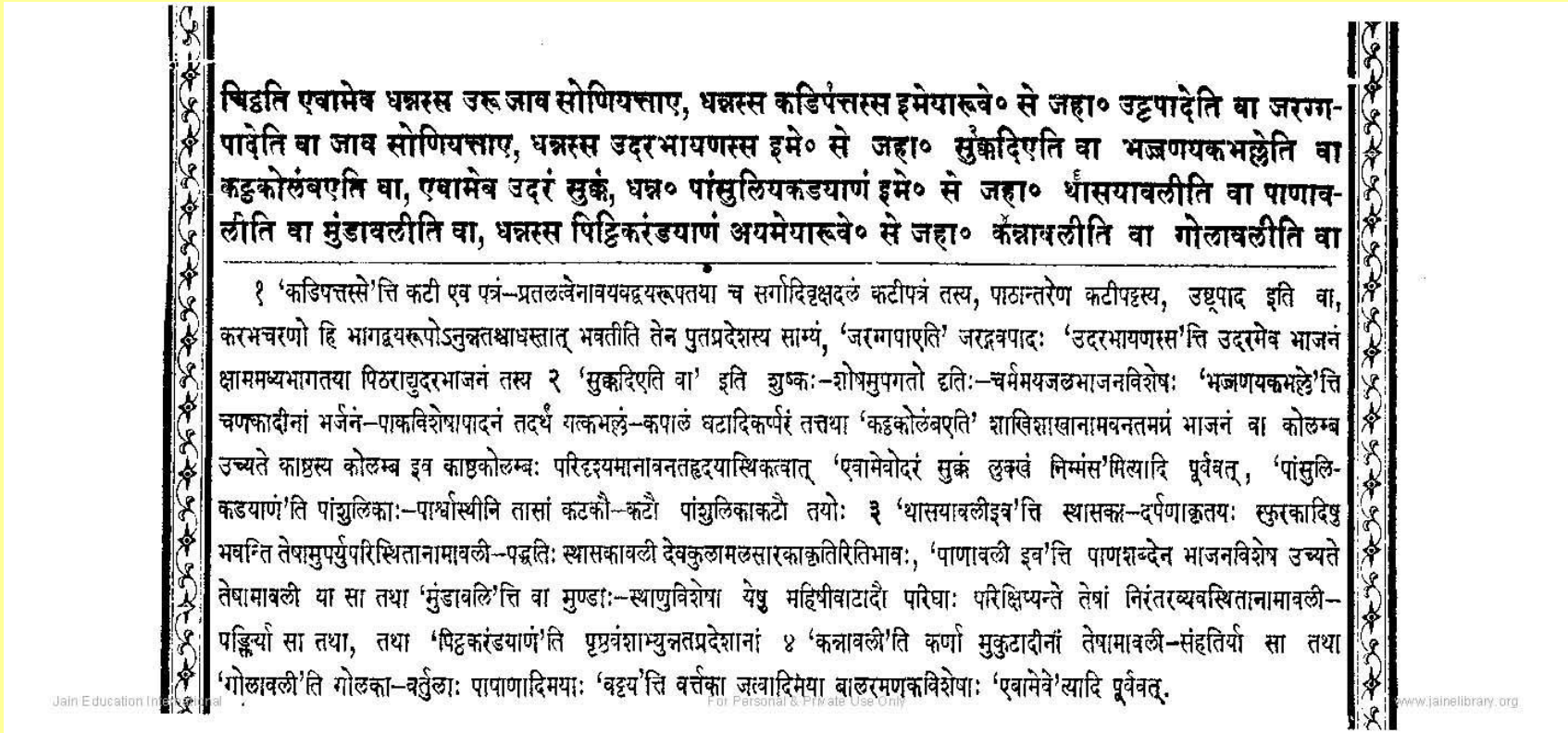

चिट्ठति एवामेव धन्नस्स उरू जाव सोणियत्ताए, धन्नस्स कडिपत्तस्स इमेयारूवे० से जहा० उट्टपादेति वा जरग्ग-पादेति वा जाव सोणियत्ताए, धन्नस्स उदरभायणस्स इमे० से जहा० सुक्कदिएति वा भज्जणयकभल्लेति वा कट्ठकोलंबएति वा, एवामेव उदरं सुक्कं, धन्न० पांसुलियकडयाणं इमे० से जहा० थासयावलीति वा पाणाव-लीति वा मुंडावलीति वा, धन्नस्स पिट्ठिकरंडयाणं अयमेयारूवे० से जहा० कन्नावलीति वा गोलावलीति वा

१ 'कडिपत्तस्से'त्ति कटी एव पत्रं–प्रतलत्वेनावयवद्वयरूपतया च सर्गादिवृक्षदलं कटीपत्रं तस्य, पाठान्तरेण कटीपट्टस्य, उष्ट्रपाद इति वा, करभचरणो हि भागद्वयरूपोऽनुन्नतश्चाधस्तात् भवतीति तेन पुतप्रदेशस्य साम्यं, 'जरग्गपाएति' जरद्गवपादः 'उदरभायणस्स'त्ति उदरमेव भाजनं क्षाममध्यभागतया पिठराद्युदरभाजनं तस्य २ 'सुक्कदिएति वा' इति शुष्कः–शोषमुपगतो दृतिः–चर्ममयजलभाजनविशेषः 'भज्जणयकभल्ले'त्ति चणकादीनां भर्जनं–पाकविशेषापादनं तदर्थं यत्कभल्लं–कपालं घटादिकर्परं तत्तथा 'कट्ठकोलंबएति' शाखिशाखानामवनतमग्रं भाजनं वा कोलम्ब उच्यते काष्ठस्य कोलम्ब इव काष्ठकोलम्बः परिदृश्यमानावनतहृदयास्थिकत्वात् 'एवामेवोदरं सुक्कं लुक्खं निम्मंस'मित्यादि पूर्ववत्, 'पांसुलि-कडयाणं'ति पांशुलिकाः–पार्श्वास्थीनि तासां कटकौ–कटौ पांशुलिकाकटौ तयोः ३ 'थासयावलीइव'त्ति स्थासकाः–दर्पणाकृतयः स्फुरकादिषु भवन्ति तेषामुपर्युपरिस्थितानामावली–पङ्क्तिः स्थासकावली देवकुलामलसारकाकृतिरितिभावः, 'पाणावली इव'त्ति पाणशब्देन भाजनविशेष उच्यते तेषामावली या सा तथा 'मुंडावलि'त्ति वा मुण्डाः–स्थाणुविशेषा येषु महिषीवाटादौ परिघाः परिक्षिप्यन्ते तेषां निरंतरव्यवस्थितानामावली–पङ्क्तिर्या सा तथा, तथा 'पिट्ठिकरंडयाणं'ति पृष्ठवंशाभ्युन्नतप्रदेशानां ४ 'कन्नावली'ति कर्णा मुकुटादीनां तेषामावली–संहतिर्या सा तथा 'गोलावली'ति गोलका–वर्तुलाः पाषाणादिमयाः 'वट्टय'त्ति वर्त्तका जत्वादिमया बालरमणकविशेषाः 'एवामेवे'त्यादि पूर्ववत्.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्य अनगार - कथा

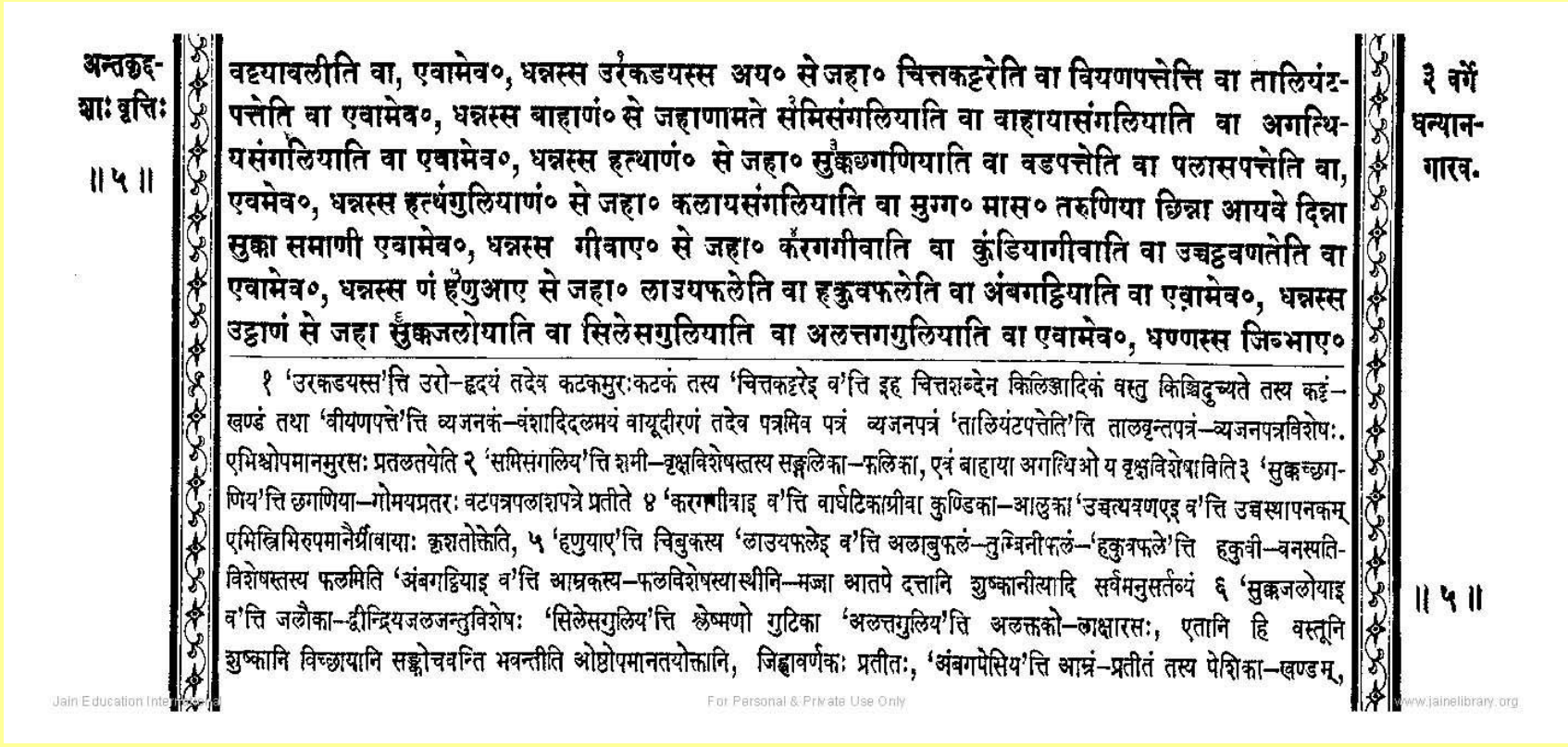

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [०९], अंग सूत्र - [०९] "अनुत्तरोपपातिकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [३] + गाथा

दीप अनुक्रम [७-१०]

अन्तकृद्-शाः वृत्तिः ॥ ५ ॥

३ वर्गे धन्यान-गारव. ॥ ५ ॥

वट्टयावलीति वा, एवामेव०, धन्नस्स उरंकडयस्स अय० से जहा० चित्तकट्टरेति वा वियणपत्तेत्ति वा तालियंट-पत्तेति वा एवामेव०, धन्नस्स बाहाणं० से जहाणामते समिसंगलियाति वा बाहायासंगलियाति वा अगत्थि-यसंगलियाति वा एवामेव०, धन्नस्स हत्थाणं० से जहा० सुक्कछगणियाति वा वडपत्तेति वा पलासपत्तेति वा, एवमेव०, धन्नस्स हत्थंगुलियाणं० से जहा० कलायसंगलियाति वा मुग्ग० मास० तरुणिया छिन्ना आयवे दिन्ना सुक्का समाणी एवामेव०, धन्नस्स गीवाए० से जहा० करगगीवाति वा कुंडियागीवाति वा उच्चट्ठवणतेति वा एवामेव०, धन्नस्स णं हणुआए से जहा० लाउयफलेति वा हकुवफलेति वा अंबगट्ठियाति वा एवामेव०, धन्नस्स उट्ठाणं से जहा सुक्कजलोयाति वा सिलेसगुलियाति वा अलत्तगगुलियाति वा एवामेव०, धण्णस्स जिब्भाए०

१ 'उरकडयस्स'त्ति उरो-हृदयं तदेव कटकमुरःकटकं तस्य 'चित्तकट्टरेइ व'त्ति इह चित्तशब्देन किलिञ्जादिकं वस्तु किञ्चिदुच्यते तस्य कट्ट-खण्डं तथा 'वीयणपत्ते'त्ति व्यजनकं-वंशादिदलमयं वायूदीरणं तदेव पत्रमिव पत्रं व्यजनपत्रं 'तालियंटपत्तेति'त्ति तालवृन्तपत्रं-व्यजनपत्रविशेषः. एभिश्चोपमानमुरसः प्रतलतयेति २ 'समिसंगलिय'त्ति शमी-वृक्षविशेषस्तस्य सङ्कलिका-फलिका, एवं बाहाया अगत्थिओ य वृक्षविशेषाविति ३ 'सुकच्छग-णिय'त्ति छगणिया-गोमयप्रतरः वटपत्रपलाशपत्रे प्रतीते ४ 'करगगीवाइ व'त्ति वार्घटिकाग्रीवा कुण्डिका-आलुका 'उच्चत्थवणएइ व'त्ति उच्चस्थापनकम् एभिस्त्रिभिरुपमानैर्ग्रीवायाः कृशतोक्तेति, ५ 'हणुयाए'त्ति चिबुकस्य 'लाउयफलेइ व'त्ति अलाबुफलं-तुम्बिनीफलं-'हकुवफले'त्ति हकुवी-वनस्पति-विशेषस्तस्य फलमिति 'अंबगट्ठियाइ व'त्ति आम्रकस्य-फलविशेषस्यास्थीनि-मज्जा आतपे दत्तानि शुष्कानीत्यादि सर्वमनुसर्तव्यं ६ 'सुक्कजलोयाइ व'त्ति जलौका-द्वीन्द्रियजलजन्तुविशेषः 'सिलेसगुलिय'त्ति श्लेष्मणो गुटिका 'अलत्तगुलिय'त्ति अलक्तको-लाक्षारसः, एतानि हि वस्तूनि शुष्कानि विच्छायानि सङ्कोचवन्ति भवन्तीति ओष्ठोपमानतयोक्तानि, जिह्वावर्णकः प्रतीतः, 'अंबगपेसिय'त्ति आम्रं-प्रतीतं तस्य पेशिका-खण्डम्,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्य अनगार - कथा

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [०९], अंग सूत्र - [०९] “अनुत्तरोपपातिकदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [३] + गाथा

दीप अनुक्रम [७-१०]

से जहा० वडपत्तेइ वा पलासपत्तेइ वा सागपत्तेति वा एवामेव०, धन्नस्स नासाए० से जहा० अंबगपेसियाति वा अंबाडगपेसियाति वा मातुलुंगपेसियाति वा तरुणिया एवामेव०, धन्नस्स अच्छीणं से जहा वीणाछिड्डेति वा वद्धीसगछिड्डेति वा पाभातियतारिगा इ वा एवामेव०, धन्नस्स कण्णाणं० से जहा० मूलाछल्लियाति वा वालुंक० कारेल्लयच्छल्लियाति वा एवामेव०, धन्नस्स सीसस्स से जहा० तरुणगलाउएति वा तरुणगएलालुयत्ति वा सिण्हालएति वा तरुणए जाव चिट्ठति एवामेव०, धन्नस्स अणगारस्स सीसं सुक्कं लुक्खं णिम्मंसं अट्ठि-चम्मच्छिरत्ताए पन्नायति नो चेव णं मंससोणियत्ताए, एवं सव्वत्थ, णवरं उदरभायणकन्नजीहा उट्ठा एएसिं

१ अम्बालकं–फलविशेषो मातुलुङ्गं–बीजपूरकमिति, ‘वीणाछिड्डे’त्ति वीणारन्ध्रं ‘वद्धीसगच्छिड्डेइ व’त्ति वद्धीसको–वाद्यविशेषः ‘पासाइयतारिगाइव’त्ति प्रभातसमये तारिका–ज्योतिः ऋक्षमित्यर्थः सा हि स्तोकतेजोमयी भवतीति तया लोचनमुपमितमिति, पाठान्तरेण प्राभातिकतारा इति २ ‘मूलाछल्लीइ व’त्ति मूलकः–कन्दविशेषस्तस्य छल्ली–त्वक् सा हि प्रतला भवतीति तयोरुपमानं कर्णयोः कृतं, ‘वालुंकछल्ली’ वालुंकं–चिर्भटं ‘कारेल्लाछल्ली’ति कारेल्लकं वल्लीविशेषफलमिति, क्वचिच्च नीतिपदं दृश्यते न चावगम्यते, ‘धण्णस्स सीस’त्ति ‘धण्णस्स णं अणगारस्स सीसस्स अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था’ ‘तरुणगलाउए व’त्ति तरुणकं–कोमलं ‘लाउयं’ अलाबु तुम्बकमित्यर्थः ‘तरुणगएलालुय’त्ति आलुकं–कन्दविशेषः तच्चानेकप्रकारमिति विशेषपरिग्रहार्थमेलालुकमित्युक्तं ‘सिण्हाएइ व’त्ति सिस्तालकं फलविशेषो यत्सेफालकमिति लोके प्रतीतं तच्च तरुणं यावत्करणात् ‘छिन्नमुण्हे दिण्णं सुक्कं समाणं मिलायमाणं चिट्ठइ’त्ति दृश्यम् ‘एव’त्ति ‘एवामेव धण्णस्स अणगारस्स सीसं सुक्कं लुक्खं निम्मंसं अट्ठिचम्मछिरत्ताए पन्नायति नो चेव णं मंससोणियत्ताए’त्ति, अयमप्यालापकः प्रत्यङ्गवर्णके दृश्यो नवरमुदरभाजनकर्णजिह्वौष्ठवर्णकेष्वस्तीति पदं न भण्यते अपि तु ‘चम्मछिराए पण्णायइ’त्ति वक्तव्यमिति, पादाभ्यामारभ्य मस्तकं यावद्वर्णितो धन्यकमुनिः । पुनस्तथैव प्रकारान्तरेण तं वर्णयन्नाह—

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्य अनगार - कथा

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [०९], अंग सूत्र - [०९] “अनुत्तरोपपातिकदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [३] + गाथा

दीप अनुक्रम [७-१०]

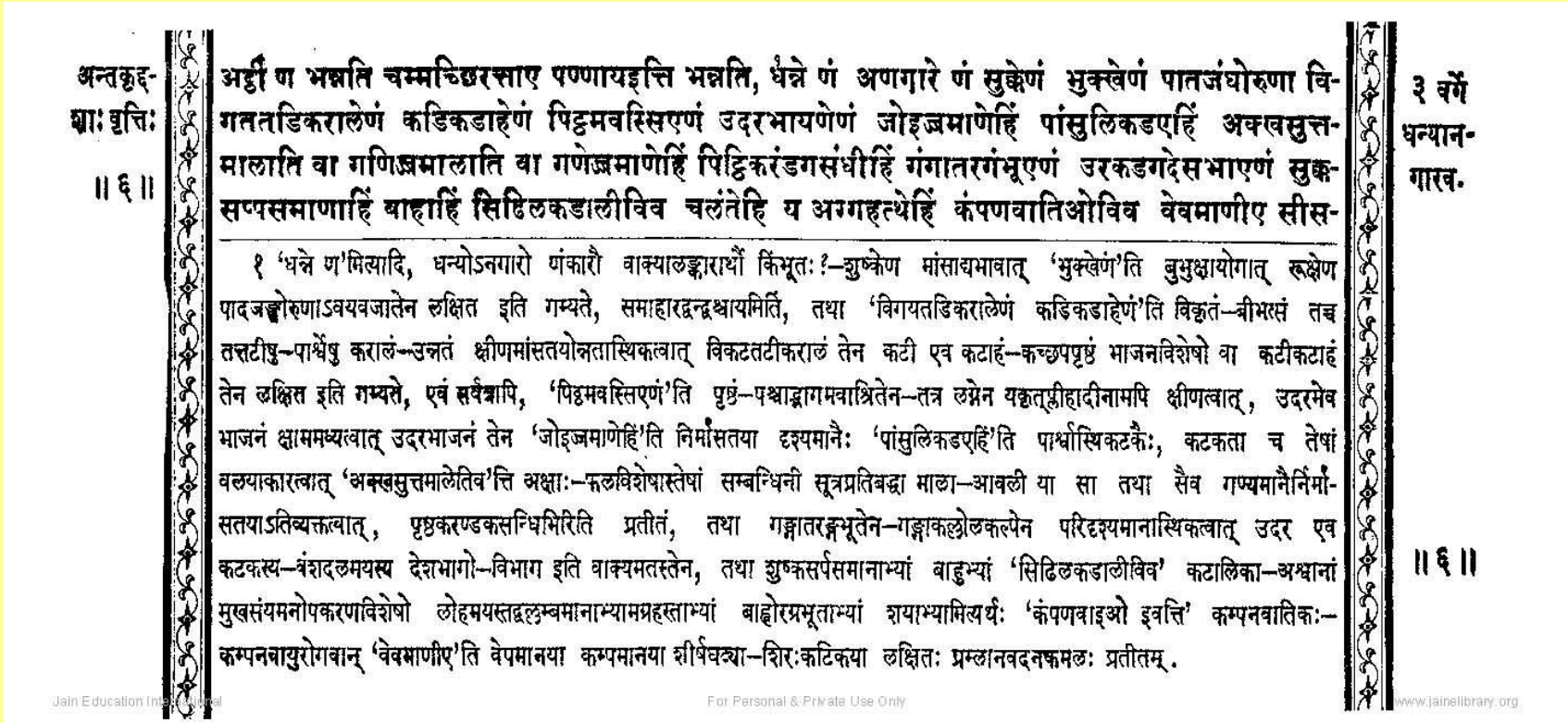

अन्तकृद्दशाः वृत्तिः ॥ ६ ॥

अट्ठी ण भन्नति चम्मच्छिरत्ताए पण्णायइत्ति भन्नति, धन्ने णं अणगारे णं सुक्केणं भुक्खेणं पातजंघोरुणा विगततडिकरालेणं कडिकडाहेणं पिट्ठमवस्सिएणं उदरभायणेणं जोइज्जमाणेहिं पांसुलिकडएहिं अक्खसुत्तमालाति वा गणिज्जमालाति वा गणेज्जमाणेहिं पिट्ठिकरंडगसंधीहिं गंगातरंगभूएणं उरकडगदेसभाएणं सुक्कसप्पसमाणाहिं बाहाहिं सिढिलकडालीविव चलंतेहि य अग्गहत्थेहिं कंपणवातिओविव वेवमाणीए सीस-

१ ‘धन्ने ण’मित्यादि, धन्योऽनगारो णंकारौ वाक्यालङ्कारार्थौ किंभूतः?–शुष्केण मांसाद्यभावात् ‘भुक्खेणं’ति बुभुक्षायोगात् रूक्षेण पादजङ्घोरुणाऽवयवजातेन लक्षित इति गम्यते, समाहारद्वन्द्वश्चायमिति, तथा ‘विगयतडिकरालेणं कडिकडाहेणं’ति विकृतं–बीभत्सं तच्च तत्तटीषु–पार्श्वेषु करालं–उन्नतं क्षीणमांसतयोन्नतास्थिकत्वात् विकटतटीकरालं तेन कटी एव कटाहं–कच्छपपृष्ठं भाजनविशेषो वा कटीकटाहं तेन लक्षित इति गम्यते, एवं सर्वत्रापि, ‘पिट्ठमवस्सिएणं’ति पृष्ठं–पश्चाद्भागमवाश्रितेन–तत्र लग्नेन यकृत्प्लीहादीनामपि क्षीणत्वात्, उदरमेव भाजनं क्षाममध्यत्वात् उदरभाजनं तेन ‘जोइज्जमाणेहिं’ति निर्मांसतया दृश्यमानैः ‘पांसुलिकडएहिं’ति पार्श्वास्थिकटकैः, कटकता च तेषां वलयाकारत्वात् ‘अक्खसुत्तमालेतिव’त्ति अक्षाः–फलविशेषास्तेषां सम्बन्धिनी सूत्रप्रतिबद्धा माला–आवली या सा तथा सैव गण्यमानैर्निर्मांसतयाऽतिव्यक्तत्वात्, पृष्ठकरण्डकसन्धिभिरिति प्रतीतं, तथा गङ्गातरङ्गभूतेन–गङ्गाकल्लोलकल्पेन परिदृश्यमानास्थिकत्वात् उदर एव कटकस्य–वंशदलमयस्य देशभागो–विभाग इति वाक्यमतस्तेन, तथा शुष्कसर्पसमानाभ्यां बाहुभ्यां ‘सिढिलकडालीविव’ कटालिका–अश्वानां मुखसंयमनोपकरणविशेषो लोहमयस्तद्वल्लम्बमानाभ्यामग्रहस्ताभ्यां बाह्वोरग्रभूताभ्यां शयाभ्यामित्यर्थः ‘कंपणवाइओ इवत्ति’ कम्पनवातिकः–कम्पनवायुरोगवान् ‘वेवमाणीए’ति वेपमानया कम्पमानया शीर्षघट्या–शिरःकटिकया लक्षितः प्रम्लानवदनकमलः प्रतीतम्.

३ वर्गे धन्यानगारव.

॥ ६ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्य अनगार - कथा

घडीए पव्वादवदणकमले [1]उब्भडघडामुहे उब्बुड्डणयणकोसे जीवं जीवेणं गच्छति जीवं जीवेणं चिट्ठति भासं भासिस्सामीति गिलाति ३ से जहा णामते इंगालसगडियाति वा जहा खंदओ तहा जाव हुयासणे इव भासरासिपलिच्छन्ने तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए उवसोभेमाणे २ चिट्ठति। (सूत्रं ३) तेणं कालेणं २ रायगिहे णगरे गुणसिलए चेतिते सेणिए राया, तेणं कालेणं २ समणे भगवं महावीरे समोसढे परिसा णिग्गया सेणिते नि० धम्मक० परिसा पडिगया, तते णं से सेणिए राया समणस्स० ३ अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदति णमंसति २ एवं वयासी-इमासि णं भंते! इंदभूतिपामोक्खाणं चोद्दसण्हं समणसाहस्सीणं कतिरे अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव?, एवं खलु सेणिया! इमासिं इंदभूतिपामोक्खाणं चोद्दसण्हं समणसाहस्सीणं धन्ने अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति इमासिं जाव साहस्सीणं धन्ने अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जर०?, एवं खलु सेणिया! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदी नामं नगरी होत्था उप्पिं पासायवडिंसए विहरति, तते णं अहं अन्नया कदाति पुव्वाणुपुव्वीए चरमाणे गामाणुगामं दूतिज्जमाणे जेणेव काकंदी णगरी जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागते अहापडिरूवं उग्गहं उ० २ संजमे० जाव विहरामि, परिसा निग्गता, तहेव जाव प-

१ 'उब्भडघडामुहे'त्ति उद्भटं-विकरालं क्षीणप्रायदशनच्छदत्वाद् घटकस्येव मुखं यस्य स तथा 'उब्बुड्डनयणकोसे'त्ति 'उब्बुड्डत्ति अन्तः प्रवेशितौ नयनकोशौ-लोचनकोशकौ यस्य स तथा 'जीवं जीवेण गच्छति' जीववीर्येण नतु शरीरवीर्येणेत्यर्थः, शेषमन्तकृतदशाङ्गवदिति ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्य अनगार - कथा

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [०९], अंग सूत्र - [०९] “अनुत्तरोपपातिकदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [४, ५]

दीप अनुक्रम [११,१२]

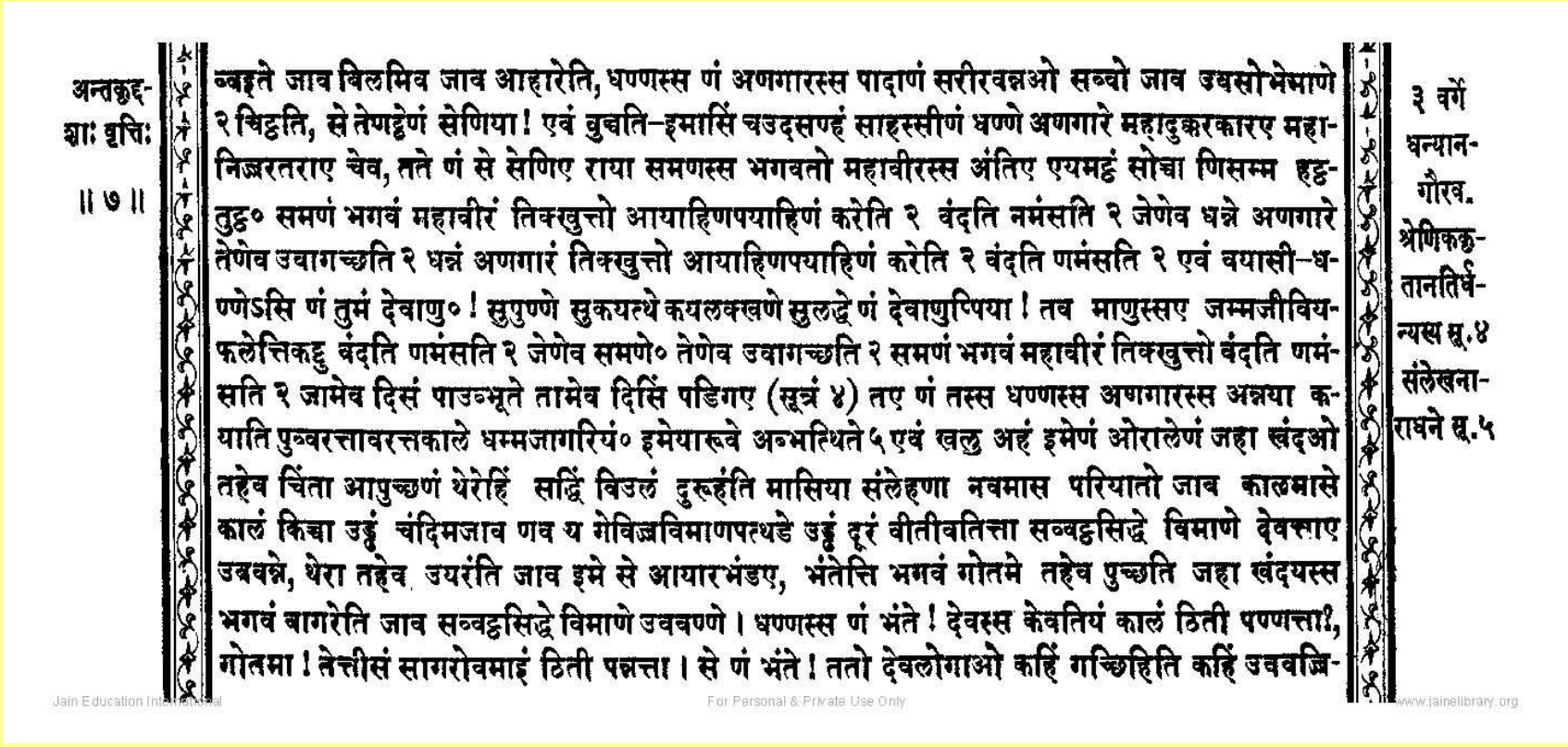

अन्तकृद्दशाः वृत्तिः ॥ ७ ॥

व्वइते जाव विलमिव जाव आहारेति, धण्णस्स णं अणगारस्स पादाणं सरीरवन्नओ सव्वो जाव उवसोभेमाणे २ चिट्ठति, से तेणट्ठेणं सेणिया! एवं वुचति–इमासिं चउदसण्हं साहस्सीणं धण्णे अणगारे महादुक्करकारए महानिज्जरतराए चेव, तते णं से सेणिए राया समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ० समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति २ वंदति नमंसति २ जेणेव धन्ने अणगारे तेणेव उवागच्छति २ धन्नं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति २ वंदति णमंसति २ एवं वयासी–धण्णेऽसि णं तुमं देवाणु०! सुपुण्णे सुकयत्थे कयलक्खणे सुलद्धे णं देवाणुप्पिया! तव माणुस्सए जम्मजीवियफलेत्तिकट्टु वंदति णमंसति २ जेणेव समणे० तेणेव उवागच्छति २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदति णमंसति २ जामेव दिसं पाउब्भूते तामेव दिसिं पडिगए (सूत्रं ४) तए णं तस्स धण्णस्स अणगारस्स अन्नया कयाति पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं० इमेयारूवे अब्भत्थिते ५ एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं जहा खंदओ तहेव चिंता आपुच्छणं थेरेहिं सद्धिं विउलं दुरूहंति मासिया संलेहणा नवमास परियातो जाव कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमजाव णव य गेविज्जविमाणपत्थडे उड्ढं दूरं वीतीवतित्ता सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववन्ने, थेरा तहेव उयरंति जाव इमे से आयारभंडए, भंतेत्ति भगवं गोतमे तहेव पुच्छति जहा खंदयस्स भगवं वागरेति जाव सव्वट्ठसिद्धे विमाणे उववण्णे। धण्णस्स णं भंते! देवस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता?, गोतमा! तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता। से णं भंते! ततो देवलोगाओ कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जि-

३ वर्गे धन्यानगौरव. श्रेणिककुतानतिर्धन्यस्य सू.४ संलेखनाराधने सू.५

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्य अनगार - कथा

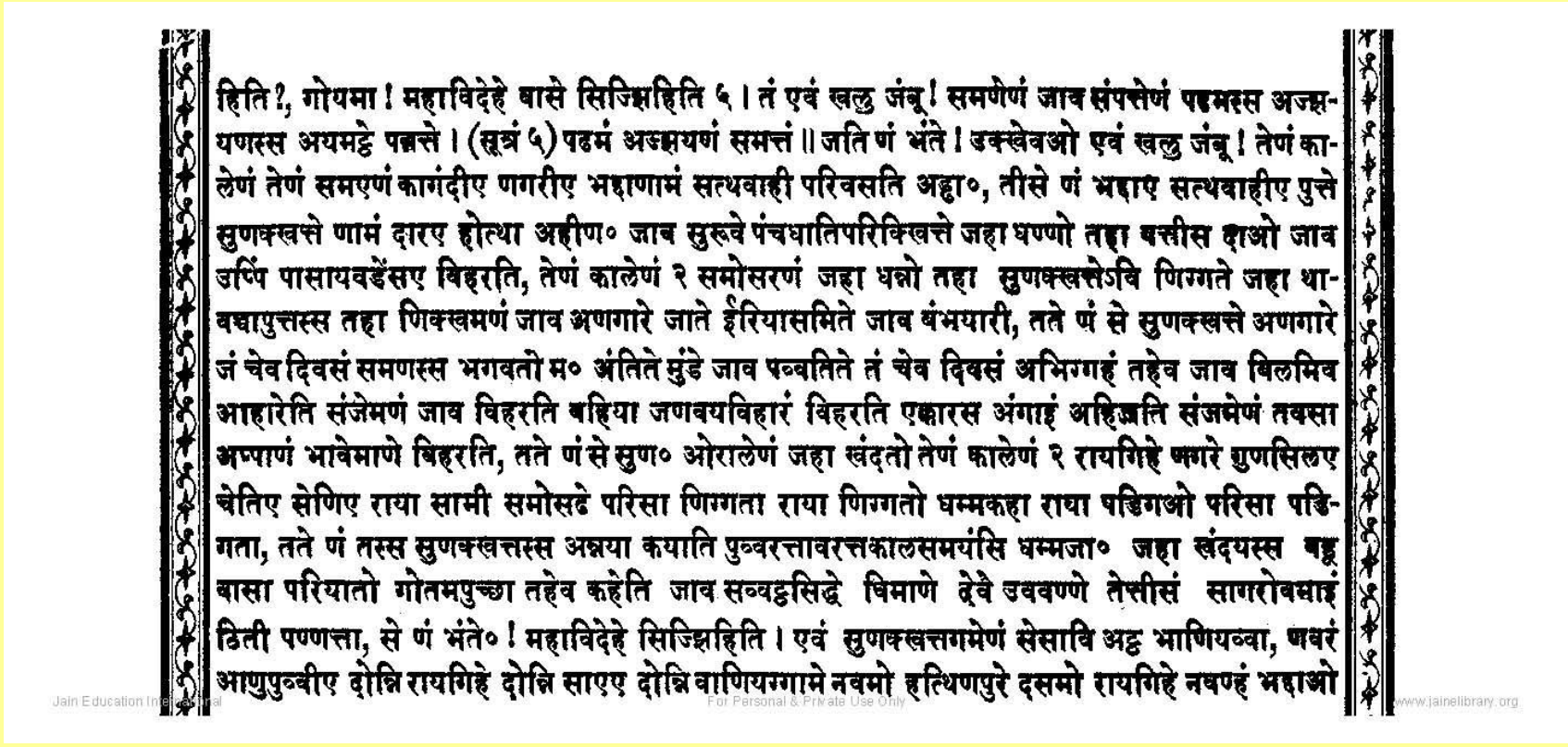

हिति?, गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ५। तं एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते। (सूत्रं ५) पढमं अज्झयणं समत्तं॥ जति णं भंते! उक्खेवओ एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं कागंदीए णगरीए भद्दाणामं सत्थवाही परिवसति अड्ढा०, तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते सुणक्खत्ते णामं दारए होत्था अहीण० जाव सुरूवे पंचधातिपरिक्खित्ते जहा धण्णो तहा बत्तीस दाओ जाव उप्पिं पासायवडेंसए विहरति, तेणं कालेणं २ समोसरणं जहा धन्नो तहा सुणक्खत्तेऽवि णिग्गते जहा थावच्चापुत्तस्स तहा णिक्खमणं जाव अणगारे जाते ईरियासमिते जाव बंभयारी, तते णं से सुणक्खत्ते अणगारे जं चेव दिवसं समणस्स भगवतो म० अंतिते मुंडे जाव पव्वतिते तं चेव दिवसं अभिग्गहं तहेव जाव बिलमिव आहारेति संजमेणं जाव विहरति बहिया जणवयविहारं विहरति एक्कारस अंगाइं अहिज्जति संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तते णं से सुण० ओरालेणं जहा खंदतो तेणं कालेणं २ रायगिहे णगरे गुणसिलए चेतिए सेणिए राया सामी समोसढे परिसा णिग्गता राया णिग्गतो धम्मकहा राया पडिगओ परिसा पडिगता, तते णं तस्स सुणक्खत्तस्स अन्नया कयाति पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजा० जहा खंदयस्स बहू वासा परियातो गोतमपुच्छा तहेव कहेति जाव सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवे उववण्णे तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता, से णं भंते०! महाविदेहे सिज्झिहिति। एवं सुणक्खत्तगमेणं सेसावि अट्ठ भाणियव्वा, णवरं आणुपुव्वीए दोन्नि रायगिहे दोन्नि साएए दोन्नि वाणियग्गामे नवमो हत्थिणपुरे दसमो रायगिहे नवण्हं भद्दाओ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

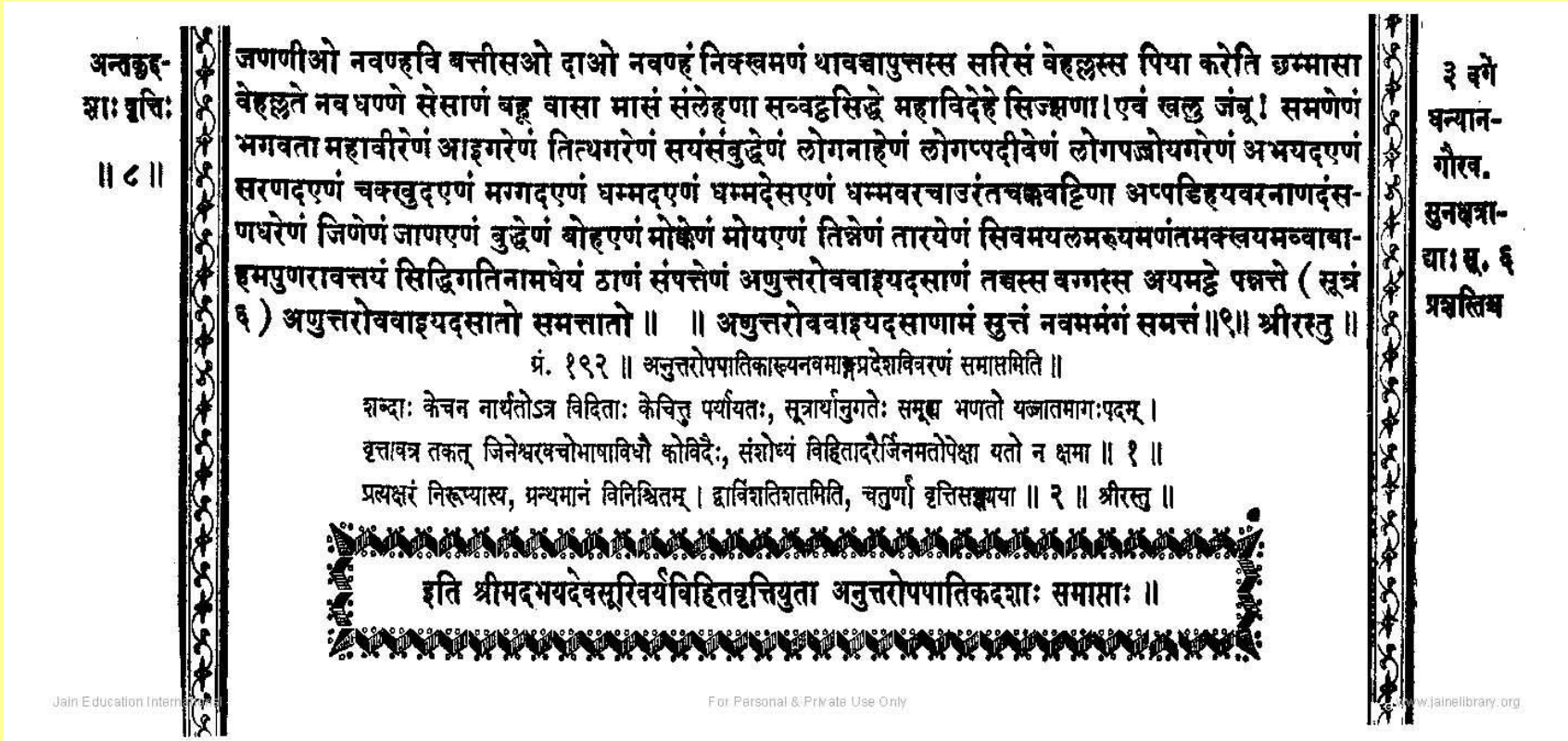

अन्तकृद्-
शाः वृत्तिः

॥ ८ ॥

जणणीओ नवण्हवि बत्तीसओ दाओ नवण्हं निक्खमणं थावच्चापुत्तस्स सरिसं वेहल्लस्स पिया करेति छम्मासा वेहल्ले नव धण्णे सेसाणं बहू वासा मासं संलेहणा सव्वट्ठसिद्धे महाविदेहे सिज्झणा। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवता महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं लोगनाहेणं लोगप्पदीवेणं लोगपज्जोयगरेणं अभयदएणं सरणदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयवरनाणदंसणधरेणं जिणेणं जाणएणं बुद्धेणं बोहएणं मोक्केणं मोयएणं तिन्नेणं तारयेणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते (सूत्रं ६) अणुत्तरोववाइयदसातो समत्तातो ॥ ॥ अणुत्तरोववाइयदसाणामं सुत्तं नवममंगं समत्तं ॥९॥ श्रीरस्तु ॥

३ वर्गे धन्यान-गौरव. सुनक्षत्रा-द्याः सू. ६ प्रशस्तिश्च

ग्रं. १९२ ॥ अनुत्तरोपपातिकाख्यनवमाङ्गप्रदेशविवरणं समाप्तमिति ॥

शब्दाः केचन नार्थतोऽत्र विदिताः केचित्तु पर्यायतः, सूत्रार्थानुगतेः समूह्य भणतो यज्जातमागःपदम् ।
वृत्तावत्र तकत् जिनेश्वरवचोभाषाविधौ कोविदैः, संशोध्यं विहितादरैर्जिनमतोपेक्षा यतो न क्षमा ॥ १ ॥
प्रत्यक्षरं निरूप्यास्य, ग्रन्थमानं विनिश्चितम् । द्वाविंशतिशतमिति, चतुर्णां वृत्तिसङ्ख्यया ॥ २ ॥ श्रीरस्तु ॥

इति श्रीमदभयदेवसूरिवर्यविहितवृत्तियुता अनुत्तरोपपातिकदशाः समाप्ताः ॥

Jain Education International

For Personal & Private Use Only

www.jainelibrary.org

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादित: (आगमसूत्र ९)

“अनुत्तरोपपातिकदशा” परिसमाप्त:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधित: संपादितश्च

"अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गसूत्र" [मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्ति:]

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित:

"अनुत्तरोपपातिकदशा" मूलं एवं वृत्ति:" नामेण

परिसमाप्त:

Remember it's a Net Publications of 'jain_e_library's'